>

Title: Regarding alleged negligence of regional languages in the examinations conducted by U.P.S.C.

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): महोदय, यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन की प्रतियोगी परीक्षाओं में साजिश के तहत जो देहातों से लड़के परीक्षा देने आते हैं, जो देशी भाषा जानते हैं, उनकी सी-सेट की परीक्षा में अंग्रेजी के साढ़े बाईस नम्बर के प्रश्न अनिवार्य कर दिये गये हैं। उससे पहले देशी भाषा वाले प्रतियोगी परीक्षाओं में जितने अभ्यर्थी आ रहे थे, अब उसका दसवां हिस्सा ही आने लगा है। साजिश के तहत देहात और गरीब घरों के लड़के जो देशी भाषा जानते हैं, तमिल, तेलुगु, मराठी, बंगला भाषा, उड़िया, मलयालम, गुजराती और अरबी, फारसी, पाली आदि देशी भाषाओं को समाप्त कर दिया गया है। इस तरह से उन पर अंग्रेजी लादकर उनकी प्रतियोगिता को खत्म करने की साजिश हुई है।

दूसरी बात यह है कि जो नई पद्धति 2011 में लागू हुई और नई पद्धति लागू होने के कारण जो परिपाटी है कि उन्हें अतिरिक्त मौका दिया जाता है। इस साल भी श्री राहुल गांधी के हस्तक्षेप से दो अतिरिक्त मौके दिये गये हैं। लेकिन उसमें कमी यह है कि 2011 में जिनकी उम्र 30 वर्ष पूरी हो गई, उन्हें दो वर्ष अतिरिक्त देने से भी कोई लाभ नहीं हो रहा है। इसलिए 2011 में जिनकी अवस्था 30 वर्ष हो गई है, उन्हें दो अतिरिक्त मौके और मिलने चाहिए। उसके लिए जो न्यूनतम आयु 30 वर्ष है, उसे बढ़ाकर 34 वर्ष किया जाना चाहिए। हमारी मांग है कि सरकार इसमें हस्तक्षेप करे। बार-बार इस मामले में सवाल उठाये गये हैं, सम्पूर्ण सदन भी इससे सहमत है, इसलिए सरकार इस पर तुंत कार्रवाई करे और जो देहातों से आने वाले देशी भाषा-भाषी वाले छात्र हैं, उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं में हिस्सेदारी मिले, उसके मुताबिक कार्रवाई हो। इसके लिए प्रदर्शन भी हुए हैं। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के लोगों ने भी प्रदर्शन किये हैं, प्रतियोगियों ने भी प्रदर्शन किये हैं और दर्जनों सांसदों ने और सभी पार्टियों के नेताओं ने लिखकर भी दिया है। इसलिए हमारी मांग है कि सरकार को इस पर तुंत गंभीरता से विचार करना चाहिए और तुंत निर्णय करना चाहिए।

सभापति महोदय :

श्री शैलेन्द्र कुमार,

श्री अर्जुन मेघवाल और

श्री राजेन्द्र अग्रवाल को उपरोक्त विषय से सम्बद्ध किया जाता है।

Nothing will go on record except what Shri Prabodh Panda says.

*(Interruptions) â€¦**